पाठ - 10
ईमान और उसके स्तंभ

الدرس العاشر - هندي
الإيمان وأركانه

ईमान कथनी, कर्म और आस्था का मिलाजुला स्वरूप है। ईमान दिल और जुबान के कथन और शरीर के अंगों के कर्मो को कहते हैं।
कथनी का मतलब है कि कलिमए शहादतको जुबानसे अदा किया जाए और दुआ स्मरण क्षमायाचना किया जाए ।
कर्मका अर्थ यह है कि उपासना के जो भी विधि और तरीक़े अल्लाह ने बताए है जैसे नमाज रोजा जकात और हज आदि उन सबको अदा किया जाए और जिन चिजों से अल्लाह ने मना किया है उनको छोड दिया जाए
और आस्थाका अर्थ यह है कि दिलसे यह स्वीकार और विश्वास किया जाए कि अल्लाह के इलावा कोई सत्य पूज्य नही है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाहके रसूल हैं
कुरआन और सुन्नत से संकलित ईमान के कुछ आधार हैं जो ये हैं अल्लाह पर ईमान, फरिश्तों पर ईमान, आकाशिय ग्रन्थो पर ईमान, रसूलों पर ईमान, आख़िरत के दिन पर और तक़दीर (भाग्य) के अच्छे–बुरे होने पर ईमान रखा जाए। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

﴿ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴾ [البقرة:٢٨٥]

यानी ''रसूल ईमान लाये उस चीज़ पर जो उनकी तरफ़ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए। ये सब अल्लाह तआला पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए। उसके रसूलों में से किसी में हम विभेद नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और अनुशरण किया हम आपसे क्षमायाचना करते हैं ऐ हमारे रब! हमें आप ही की तरफ़ लौटकर आना है (सूरह अल–बक़रा, आयत 285)
इसी तरह सही मुस्लिम में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान के बारे में पूछा। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

﴿ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ ﴾

ईमान यह है कि आप अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पर ईमान रखें
यही 6 बातें सही अक़ीदे की बुनियादें हैं जो कुरआन करीम में मौजूद हैं और जिन्हें देकर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमको भेजा गया। इन्हीं बातों को ईमान का स्तम्भ कहा जाता है।